(Fifteen)
Topic 15

भवादिगण: लृङ् लकार तथा अत् धातु लिङ् लकार पर्यन्त

लिङ् निमित्ते लृङ् क्रियातिपत्तौ ।

हेतुहेतुमद्भावादि लिङ् निमित्तम्, तत्र भविष्यत्यर्थे लृङ् स्यात्, क्रियाया अनिष्पत्तौ गम्यमानायाम् । अभविष्यत्, अभविष्यताम्, अभविष्यन्, अभविष्यः, अभविष्यतम्, अभविष्यत, अभविष्यम्, अभविष्याव, अभविष्याम । 'सुप्तो दिवं चेद् अभविष्यत् तदा सुप्तमभविष्यत्' इत्यादि रोकम् । अत सातत्यगमने । अतति ।

लिङ् के निमित्त होने पर क्रिया की सिद्धि गम्यमान हो, तो भविष्यत्काल में धातु से लृङ् लकार होता है । लिङ् का निमित्त है - हेतु हेतुमद्भाव आदि । उदाहरण के लिए कस्मै नमेत् चेत् सुखं यायात् इस वाक्य में नमस्कार-क्रिया सुख प्राप्ति क्रिया का हेतु है, सुख-प्राप्ति क्रिया सहेतुक है, अत: वह हेतुमत् कहा जाता है । इन दोनों के सम्बन्ध को हेतु-हेतुमद्भाव सम्बन्ध कहते हैं । जब हेतुहेतुमद्भाव आदि के स्थलों में भविष्यत् काल और क्रिया की असिद्धि प्रतीत होती है, तब दोनों क्रियाओं में लृङ् लकार का प्रयोग होता है ।

अत आदेः

अभ्यासस्याऽऽदेरतो दीर्घः स्यात् । आत, आतुतः, आतुः । आतिथ, आतथुः, आत । आत, आतिव, आतिम । आतिता, आतिष्यति, अततु ।

लिट् परे होने पर अभ्यास के आदि ह्रस्व अकार के स्थान पर दीर्घ होता है ।

P.T.O.

उदाहरण के लिए 'अत्' धातु से लिट् लकार में प्रथम एकवचन में 'अत् अ' रूप बनता है। यहाँ 'अत्' के अकार को 'इक्' होकर 'अ अत् अ' रूप बनेगा। तब अभ्यास के आदि इक् अकार को प्रकृत सूत्र से दीर्घ होकर 'आ अत् अ' रूप बनता है। सवर्ण दीर्घ करने पर 'आत' रूप सिद्ध होता है।

आडजादीनाम्।

अजादिरङ्गस्याङ्गात् लुङ्लङ्लृङ्क्षु। आतत्। अतेत्। अत्यात्, अत्यास्ताम्। लुङि सिच्चि इडागमे कृते।

लुङ् लङ् और लृङ् परे होने पर अजादि अङ्ग का अवयव 'आट्' होता है। 'आट्' में टकार इत्संज्ञक है। अत् टित् होने के कारण आद्यन्तौ टकितौ परिभाषा से यह अङ्ग का आदि अवयव बनता है। उदाहरण के लिए 'अत्' धातु से लिङ् में प्रथम-एकवचन में तिप्, शप् होकर 'अत् अति' रूप बनता है। यहाँ लुङ्लङ् से 'अट्' आगम प्राप्त होता है। किन्तु अङ्ग के आदि में स्वर होने के कारण प्रकृत सूत्र से उसका बाध होकर 'आट्' आगम होता है— 'आ अत् अति' यहाँ वृद्धि - आकारादेश तथा टकार का लोप करने पर 'आतत्' रूप सिद्ध होता है।